दर्शनशास्त्र का इतिहास
65 जॉन डेवी,
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

जॉन डेवी पर आने से पहले, मैं अमेरिकन प्रैग्मैटिज़्म और खास तौर पर विलियम जेम्स के बारे में जो कुछ भी कह रहा था, उसे पूरा कर लेना चाहता हूँ। हम व्हाइटहेड की प्रोसेस फिलॉसफी और जेम्स के तरह के प्रैग्मैटिज़्म के बीच कुछ समानताएँ देख रहे थे । हम जॉन डेवी में और भी बहुत कुछ देखेंगे।

लेकिन समानताएं इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने डेसकार्टेस और फाउंडेशनलिज़्म को मना कर दिया है, क्योंकि वे अनुभव के किसी बनावटी, एब्स्ट्रैक्ट नज़रिए के बजाय ठोस अनुभव को अहमियत देने की चिंता करते हैं, जैसा कि आपको जॉन लॉक में मिलता है। ऑर्गेनिक मॉडल, जहां अलग-अलग घटनाएं एक पूरी प्रक्रिया में आपस में जुड़ी होती हैं, मुझे लगता है कि प्रैग्मैटिज़्म और व्हाइटहेड के बीच यही बात कॉमन है। दोनों परंपराओं के बीच बड़ा अंतर प्रैग्मैटिस्ट लोगों का मेथोडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म है।

चार्ल्स सैंडर्स पीयर्स ने इसे शुरू किया था, आपको हैंडआउट और विश्वास को पक्का करने का उनका आइडिया याद होगा, लेकिन यह विलियम जेम्स में भी काफी साफ है जब वह फिलॉसॉफिकल झगड़ों को सुलझाने के तरीके के तौर पर प्रैग्मैटिज्म की बात करते हैं। कैसे? ओह, असल में किसी थ्योरी के एंपिरिकल नतीजों को चेक करके। क्या वे होते हैं? यह एक हाइपोथीसिस का एक्सपेरिमेंटल कन्फर्मेशन है, जो पीयर्स का साइंटिफिक मेथड का आइडिया है।

तो जेम्स इसे फिलॉसफी में ला रहे हैं। इसका मतलब है कि फिलॉसफी सिर्फ़ उसी चीज़ तक सीमित रहेगी जिसका ठोस अनुभव के लिए महत्व है, जिसके प्रैक्टिकल नतीजे हैं। और जेम्स ने रेडिकल एम्पिरिसिज्म नाम से एक किताब पब्लिश की थी।

रेडिकल एम्पिरिसिज़्म। बात यह है कि जॉन लॉक उतने रेडिकल नहीं थे। और रेडिकल एम्पिरिसिज़्म में, आप देखिए, वह मतलब की एक प्रैक्टिकल थ्योरी के साथ काम करते हैं।

सिर्फ़ वही झगड़े मतलब के होते हैं जिनके प्रैक्टिकल नतीजे हों। मतलब की प्रैक्टिकल थ्योरी। और इसलिए वह सबस्ट्रेटम या सब्सटेंस, मन, मैटर वगैरह से जुड़े किसी भी मुद्दे पर बात करने से मना कर देता है।

इसका अनुभव से कोई लेना-देना नहीं है, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता । इसी तरह, वह मेटाफिजिकल मॉडिज़्म बनाम मेटाफिजिकल प्लूरलिज़्म, मैटेरियलिज़्म बनाम आइडियलिज़्म पर बहस में पड़ने से मना कर देते हैं । और आप सोचने लगते हैं कि क्या फिलॉसफी में थ्योरेटिकल मुद्दों की पूरी रेंज को छोड़ दिया जा रहा है।

खैर, यह इस तरह की चीज़ है, रेडिकल एम्पिरिसिज़्म थ्योरी ऑफ़ मीनिंग, जो मुझे लगता है कि पिछली बार मेरे एक ग्रेजुएट प्रोफ़ेसर के उस कमेंट के नीचे है जिसका मैंने आपको ज़िक्र किया था, जो एक सेमिनार शुरू कर रहे थे, जिन्होंने कहा था कि उनके हिसाब से, प्रैग्मैटिज़्म और पॉज़िटिविज़्म दोनों एक ही चीज़ हैं और दोनों ही बंद गली हैं। क्योंकि दोनों में मीनिंग की एक थ्योरी है, प्रैग्मैटिक थ्योरी ऑफ़ मीनिंग और फिर पॉज़िटिविस्ट थ्योरी ऑफ़ मीनिंग जिसे हम बाद में देखेंगे, जो मेंटली सिग्निफिकेंट, कॉग्निटिवली सिग्निफिकेंट को कुछ खास तरह के एंपिरिकल नतीजों तक सीमित कर देता है, आप देखिए। और यहाँ जेम्स में, यह रेडिकल प्रैग्मैटिज़्म है।

पॉज़िटिविस्ट में, इसे आयर ने मेटाफ़िज़िक्स का एलिमिनेशन कहा है। जब हम पॉज़िटिविज़्म में जाएँगे तो आप आयर का चैप्टर इसी टाइटल से पढ़ेंगे। तो जेम्स के पास वह नोट है।

एंपिरिकल नतीजों को देखने, एंपिरिकल नतीजों से वेरिफ़ाई करने की यह आदत उनके एक निबंध 'द विल टू बिलीव' में सामने आती है, जिसे आप शायद फिलॉसफी ऑफ़ रिलिजन में पढ़ेंगे, उदाहरण के लिए। जेम्स जो कर रहे हैं वह एक पुराने लेखक, डब्ल्यूके क्लिफोर्ड के एक लेख का जवाब है, जिसका नाम 'द एथिक्स ऑफ़ बिलीफ' था, जिसमें क्लिफोर्ड ने तर्क दिया था कि अगर एक नज़रिए के बजाय दूसरे के लिए सबूत का वज़न नहीं है, तर्क का वज़न नहीं है, तो कोई फ़ैसला लेना नैतिक रूप से गैर-ज़िम्मेदाराना है । आपको फ़ैसला नहीं लेना चाहिए।

जॉन लॉक की पुरानी एविडेंस वाली लाइन है, आप देखिए। आपको अपने विश्वास को सबूत के हिसाब से बनाना होगा । और अगर किसी एक के लिए दूसरे से ज़्यादा सबूत नहीं हैं, जो कि ज़रूरी है, तो अपनी मंज़ूरी न दें।

विलियम जेम्स ने अपनी किताब 'द विल टू बिलीव' में जवाब दिया कि अपनी मंज़ूरी रोक पाना हमेशा मुमकिन नहीं होता। ज़िंदगी की असलियत में कुछ ज़रूरी ऑप्शन और चॉइस हम पर थोपे जाते हैं। पक्का अनुभव।

तो उस सबूत वाली मांग के बिना, आप कैसे फैसला करेंगे? समझे ? और उनका कहना है कि आप खुद से पूछें, दोनों विश्वासों के नतीजों के बारे में, ठोस अनुभव के लिए, जिसका मतलब जेम्स के लिए, उनके साइकोलॉजिकल बैकग्राउंड के साथ, आपकी साइकोलॉजिकल भलाई के लिए है। समझे ? तो अगर एक विश्वास आपको दूसरे के मुकाबले साइकोलॉजिकली ज़्यादा देता है, तो यह विश्वास करने की इच्छा का इस्तेमाल करने के लिए काफी आधार है। समझे ? अपनी मर्ज़ी से सहमति।

वह बात सही साबित हुई, वह निबंध जॉन लॉक की सबूतों वाली मांग को खारिज करने के क्लासिक तरीकों में से एक रहा है। आप समझे? दूसरी बात, मुझे लगता है, स्कॉटिश रियलिस्ट असर से निकली है, जो हमारे समय के लोगों जैसे एल्विन प्लांटिंगा पर पड़ा, जो सबूतों वाली मांग के बारे में कहते हैं, मुझे इस पर यकीन करने का कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे शब्दों में, सबूतों वाली मांग के लिए सबूत कहाँ है? कुछ भी नहीं।

क्योंकि वह यह कहने की कोशिश कर रहे हैं कि कुछ ऐसी मान्यताएँ हैं जो इतनी नैचुरली, अचानक आती हैं कि हमारे पास अपनी मान्यताओं को रोकने के अलावा कोई चारा नहीं होता। तो, विलियम जेम्स, उस लेख में, आप उनका तरीका काम करते हुए देखते हैं। उनका एक और लेख है जिसमें वह सख्त और नरम दिमाग वाले फिलॉसफर के बारे में बात करते हैं।

साइकोलॉजिकल अंतर, आप देखिए। ताकि अगर वे किसी ठोस अनुभव की कैश वैल्यू चुकाते हैं, तो साइकोलॉजिकल। और इसलिए उन्हें लगता है कि सख्त सोच वाले फिलॉसफर कुछ बातों पर यकीन करेंगे।

वे एंपिरिसिज़्म वगैरह, डिटरमिनिज़्म वगैरह में यकीन करेंगे। नरम दिल वाले फिलॉसफर दूसरी बातों पर यकीन करेंगे। विश्वास का पूरा पर्सनल कॉन्टेक्स्ट।

अब, जबकि यह सुनने में काफी रिलेटिविस्टिक लगता है, सच तो यह है कि, अगर आप विश्वास की साइकोलॉजी को देख रहे हैं, तो एक पर्सनैलिटी का नेचर उस पर असर डालता है। आप जानते हैं, मुझे हैरानी है कि क्या कांट की बड़ी आलोचना, जिससे आप में से कुछ लोग प्यार करने लगे हैं, कभी किसी कैलिफ़ोर्निया हिप्पी ने लिखी होगी। आप देखिए, वह एक प्रशिया बैचलर का काम था, जिसकी ज़िंदगी इतनी ऑर्गनाइज़्ड थी कि जब वह अपनी यूनिवर्सिटी के लिए सड़क पर चलता था तो पड़ोसी अपनी घड़ियाँ उसी हिसाब से सेट करते थे।

और कैलिफ़ोर्निया की आरामदेह लाइफस्टाइल में शायद ही ऐसा काम हो। खैर, आप में से जो लोग अगले साल मेरे दोस्त स्टू हैकेट के साथ कांट सेमिनार में जाएँगे , वे उनके साइकोलॉजिकल मेकअप और फ्यूरिसन की आलोचना में समानताएँ देखेंगे । मेरा मतलब है, प्यारे स्टू, वह बहुत ऑर्गनाइज़्ड हैं।

कुछ साल पहले जब वे हिंदू फिलॉसफी पढ़ने के लिए इंडिया गए थे, तो उन्हें लगभग नर्वस ब्रेकडाउन हो गया था, क्योंकि वे बहुत अस्त-व्यस्त थे। साइकोलॉजी और पर्सनैलिटी के बीच का रिश्ता एक दिलचस्प चीज़ है। और हाँ, अगर आप उस साइकोलॉजिकल डिपेंडेंसी से बाहर निकलना चाहते हैं, तो ज़ाहिर है, आपको कुछ और यूनिवर्सल पॉइंट्स ऑफ़ रेफरेंस की ज़रूरत होगी।

आप जानना चाहते हैं कि जेनेरिक इंसानी स्वभाव क्या है , न कि यह खास तरह का स्वभाव क्या है। ध्यान रखें कि रिलेटिव का उल्टा यूनिवर्सल होता है। और ऐसे कई, कई फैक्टर हैं जो इस बात पर असर डालते हैं कि कोई इंसान क्या मानता और सोचता है।

उनमें से कुछ अलग-अलग तरह के, अलग-अलग तरह के होते हैं। कुछ कल्चरल होते हैं। कुछ आम तौर पर इंसानी होते हैं, आप देखिए।

और रिलेटिव से आगे बढ़कर यूनिवर्सल तक पहुँचने के लिए, आपको आम तौर पर इंसानी चीज़ों को समझना होगा और जो आम तौर पर इंसान के लिए नैचुरली आता है, जो मुझे लगता है कि ऑगस्टीन कर रहे थे जब उन्होंने कहा कि दिल तब तक बेचैन रहता है, जब तक, आप देखिए, उन्हें नहीं लगता कि आम तौर पर यही वह है। खैर, आपको उस तरह की चीज़ों और

एग्ज़िस्टेंशियलिज़्म, कुछ तरह के एग्ज़िस्टेंशियलिज़्म के बीच भी एक जैसी बातें मिलेंगी। प्रैक्टिकल चीज़ों की अहमियत, आप देखिए, इंसानी सब्जेक्टिविटी, पूरा इंसान, हमारी अंदरूनी सोच, साथ ही ऑब्जेक्टिव फैक्टर्स पर विचार करना शामिल है।

और खासकर जेम्स में, यह साफ़ है। खैर, शायद जेम्स के बारे में इतना ही काफ़ी है यह दिखाने के लिए कि वह क्या कर रहा है। कोई कमेंट्स, या हम बड़े D के लिए तैयार हैं? ड्यूई।

ठीक है। जब मैं कहता हूँ कि डेवी का जन्म 1859 में हुआ और उनकी मृत्यु 1952 में हुई, तो यह काफी नया लगता है । मुझे लगता है कि वह पहले व्यक्ति हैं जिनके बारे में हम सदी के बीच, 1952 से आगे आए हैं।

ड्यूई न सिर्फ़ प्रैग्मैटिज़्म के रिप्रेजेंटेटिव हैं, जो असल में एक तरीका है, फ़िलॉसफ़िकल और दूसरे सवालों से निपटने का एक तरीका, बल्कि वे उस चीज़ के भी रिप्रेजेंटेटिव हैं जिसे मैं, जिसे मैं इवोल्यूशनरी नेचुरलिज़्म कहना पसंद करता हूँ, कह सकता हूँ। कहने का मतलब है, वे एक फ़िलॉसफ़िकल नेचुरलिस्ट हैं। हर चीज़ को फ़िज़िकल प्रोसेस के हिसाब से समझाया जा सकता है।

लेकिन जिस तरह का नेचुरलिज़्म वह मानते हैं, वह डार्विन की नेचुरल सिलेक्शन की थ्योरी से काफी प्रभावित है। उनका यह इवोल्यूशनरी नेचुरलिज़्म उस इवोल्यूशनरी आइडियलिज़्म से एक कदम आगे है, जिसमें उन्होंने फिलोसोफिकल तौर पर शुरुआत की थी, इवोल्यूशनरी आइडियलिज़्म, जिसमें हिस्टोरिकल प्रोसेस जीवन के ज़्यादा से ज़्यादा कॉम्प्लेक्स रूपों, फिजिकल, सोशल, कल्चरल, और ज़्यादा से ज़्यादा ठोस अनुभव की ओर खुलता है। अब, उनके इस इवोल्यूशनरी नेचुरलिज़्म में, आपको ये तीन खास कॉन्सेप्ट मिलेंगे, जो मुझे लगता है कि आपको बहुत जल्दी यह देखने में मदद करेंगे कि वह अपनी फिलोसोफिकल राइटिंग में जिन अलग-अलग टॉपिक पर बात करते हैं, उनमें क्या कर रहे हैं।

और, ज़ाहिर है, उन्होंने उन सभी को बहुत अच्छे से समझाया है। उन्होंने अपनी किताब 'जस्ट इन रिकंस्ट्रक्शन' में उन सभी को समझाया है, जो आप पढ़ रहे हैं। अनुभव का उनका कॉन्सेप्ट, सबसे पहले , जॉन लॉक के अनुभव के कॉन्सेप्ट के बजाय व्हाइटहेड और जेम्स के कॉन्सेप्ट के ज़्यादा करीब है।

तो, व्हाइटहेड, जेम्स और ड्यूई कुछ हद तक एक जैसे हैं। अनुभव में इमोशनल, साइकोलॉजिकल अनुभव शामिल हैं । खैर, व्हाइटहेड और जेम्स के साथ भी ऐसा ही था।

लेकिन इसमें सोशल और कल्चरल अनुभव भी शामिल हैं। और जब आप उनकी किताब पढ़ते हैं, तो शायद आप खुद से सोचते हैं कि क्या उन पर नॉलेज की सोशियोलॉजी के लेखकों का असर है, क्योंकि वे फिलॉसफी को बनाने में सभी सोशल और कल्चरल असर के बारे में बात कर रहे हैं। असल में, अगर व्हाइटहेड फिलॉसफी पर नेचुरल साइंस के असर के बारे में बात कर रहे हैं, तो ड्यूई फिलॉसफी पर सोशल बदलाव के असर के बारे में बात कर रहे हैं।

और आप जिस भी बारे में सोचें, ध्यान दें कि वह डेसकार्टेस के स्टोव-हीटेड कमरे से कितना अलग है, जिसमें बाहर से कोई असर नहीं होता। स्टोव-हीटेड कमरा बहुत कुछ का प्रतीक बन जाता है। अकेला इंसान और उसके अपने मन की प्राइवेसी, हर बाहरी असर, चाहे वह ऐतिहासिक हो या कुछ और, को बाहर कर देता है।

ज़िंदगी से इतना अलग। खैर, तो ठोस अनुभव, एक बहुत, बहुत बड़ी चीज़ है। वह फ़्लूइड अनुभव की बात करते हैं।

फ्लूइड एक्सपीरियंस। जैसे कि यह एक लगातार बहने वाला प्रोसेस है जिसके बारे में आपको शायद ही पता हो, यह इतना फ्लूइड है। मुझे याद है जब मैंने पहली बार ड्यूई को पढ़ा था और फ्लूइड एक्सपीरियंस के बारे में जाना था, मेरे पास एक 46 डॉज थी, जिसे उस समय फ्लूइड ड्राइव कहा जाता था।

फ्लूइड ड्राइव क्या था? खैर, मुझे पक्का नहीं पता, लेकिन मुझे लगता है कि यह ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन की तरफ एक कदम था, क्योंकि बदलाव इतना आसान था कि आपको गियर बदलने का शायद ही पता चलता था, हालांकि आप इसे मैनुअली बदलते थे। फ्लूइड ड्राइव। आपको एक पल या एक सिचुएशन से दूसरी सिचुएशन में जाने का शायद ही पता चलता है।

एक दूसरे में बहता है। फ्लूइड ड्राइव। ड्यूई के लिए फ्लूइड अनुभव।

लेकिन फ़्लूइड एक्सपीरियंस, जो असल में सिर्फ़ आदत, हैबिटुअल बिहेवियर, हैबिटुअल रिस्पॉन्स का नतीजा है, उसे ड्यूई प्रॉब्लम सिचुएशन कहते हैं, उससे रुकावट आती है। प्रॉब्लम सिचुएशन। और सिर्फ़ प्रॉब्लम सिचुएशन ही सोच को जगाती हैं।

देखिए, इंटेलिजेंस का रोल प्रॉब्लम सिचुएशन को सॉल्व करने में होता है। नहीं तो, आप आदतन बिना सोचे-समझे आगे बढ़ते रहते हैं। आप जानते हैं, क्या आप गाड़ी चलाते समय सोचते हैं कि आप क्या कर रहे हैं? या आप बस यही सोचते हैं कि जब आप किसी प्रॉब्लम सिचुएशन में फंस जाते हैं तो क्या करना है? मुझे सिएटल में गाड़ी चलाना याद है।

और अगर आपने कभी सिएटल में गाड़ी चलाई है, तो आप जानते होंगे कि वहाँ कुछ बहुत खड़ी पहाड़ियाँ हैं जिनके ऊपर स्टॉप साइन लगे हैं। यह लगभग सैन फ्रांसिस्को के कुछ हिस्सों में गाड़ी चलाने जितना ही बुरा है। आप जानते हैं, आपने उस पहाड़ी की तस्वीरें देखी होंगी जो गोल-गोल घूमती रहती है ।

आप जानते हैं, उनके पास ऐसे होते हैं जो सीधे ऊपर जाते हैं और ऊपर स्टॉप साइन होते हैं। अब, अगर आप यहाँ के समतल इलाके में गाड़ी चलाते हुए बड़े हुए हैं तो आप आम तौर पर इस तरह कैसे बर्ताव करते हैं? प्रॉब्लम वाली सिचुएशन। आप कई ऑप्शन के बारे में सोचते हैं, और फिर आप वही कर सकते हैं जो मैंने ऐसे मौकों पर समय-समय पर किया है, इमरजेंसी ब्रेक दबाएँ, और फिर क्लच दबाकर गियर बदलें।

और धीरे-धीरे इमरजेंसी ब्रेक छोड़ें, उम्मीद है कि आप इसे ऊपर तक ले जाने के लिए काफ़ी गैस लगाएंगे। खैर, बात यह है कि फ्लूइड एक्सपीरियंस में प्रॉब्लम सिचुएशन से रुकावट आती है, जिसके लिए सोचने की ज़रूरत होती है। आप आइडिया लेकर आते हैं।

मुझे पता है मैं क्या करूँगा। अरे, चलो वो ट्राई करते हैं। और इसलिए यह एक्सपेरिमेंटल सोच है।

के लिए आइडिया के साथ एक्सपेरिमेंट करते हैं । अब, अगर आपको डायलेक्टिकल सिचुएशन ढूंढना पसंद है, तो प्रॉब्लम सिचुएशन एक डायलेक्टिकल सिचुएशन है। इसमें एक थीसिस, एक एंटीथीसिस और एक सिंथेसिस होता है।

थीसिस एक ऐसा फ़्लूइड एक्सपीरियंस है जो किसी प्रॉब्लम वाली सिचुएशन, किसी खतरनाक सिचुएशन में एंटीथीसिस से रुक जाता है । थीसिस, एंटीथीसिस। और सही आइडिया के साथ आने के लिए आप जो ढूंढ रहे हैं, वह एक सिंथेसिस है जो आपको एंटीथीसिस की थीसिस को अपनाने और अगले पर आगे बढ़ने में मदद करेगा।

सिंथेसिस अगले के लिए थीसिस बन जाता है। तो डायलेक्टिक वहीं है। खैर, इंटेलिजेंस तो आदतन अनुभव के दौरान प्रॉब्लम सॉल्विंग है , जो उनकी फंक्शनलिस्ट साइकोलॉजी की ओर ले जाती है।

फंक्शनलिस्ट साइकोलॉजी, आसान शब्दों में, यह थ्योरी है कि हमारे सभी मेंटल प्रोसेस, साइकोलॉजिकल प्रोसेस, बस शरीर की ज़रूरत के काम हैं, बायोलॉजिकल ज़रूरत के काम हैं। तो हमारी इच्छाएँ एक जीव के बायोलॉजिकली बेस्ड काम हैं जो अपने माहौल के साथ एडजस्ट करने की कोशिश कर रहा है, माहौल में किसी चीज़ पर रिस्पॉन्ड करने की कोशिश कर रहा है। रीज़न उस जीव का एक काम है जो डेवलप हुआ है, यह सोचते हुए कि माहौल के साथ कैसे एडजस्ट किया जाए।

और कभी-कभी वह वजह प्रॉब्लम की स्थिति के बारे में आपको जो पता चलता है, उसके हिसाब से अपनी इच्छाओं को बदलने में शामिल होती है। आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।

देखो और देखो और देखो और देखो। और ग्रोथ किसी तय लक्ष्य की ओर एक स्थिर गति नहीं है, बल्कि एक लगातार विकास की प्रक्रिया है जिसमें अलग-अलग अनुभव, जो कि स्वयं है, में शामिल हो रहे हैं। फंक्शनलिस्ट साइकोलॉजी।

और आप पेज 83 से 86 में कुछ ऐसा देख सकते हैं, जैसे, पेज पांच और छह में, जहाँ वह ज़ोर देते हैं कि हम असल में बुद्धि के बजाय इच्छा के जीव हैं। फंक्शनलिस्ट साइकोलॉजी। ठीक है, और यहीं से आप इस सब के पीछे, अनुभव के कॉन्सेप्ट और साइकोलॉजी , उनकी नेचुरल सिलेक्शन की थ्योरी को देखना शुरू करते हैं।

आप चैप्टर तीन में देखेंगे कि वह साफ़ तौर पर स्पीशीज़ की किसी भी फ़िक्सिटी को मना करते हैं क्योंकि वह मानते हैं कि स्पीशीज़ की फ़िक्सिटी का पारंपरिक नज़रिया बस अरस्तू के फ़िक्स्ड

फ़ॉर्म, फ़िक्स्ड एसेंस का ही एक एक्सटेंशन है। मुझे लगता है, सच कहूँ तो, वह सही हैं कि स्पीशीज़ की फ़िक्सिटी बस अरस्तू की परंपरा का ही एक कंटिन्यूएशन है। वह किसी भी रियल यूनिवर्सल को मना करते हैं, और रियल यूनिवर्सल को मना करते हुए, वह एक फ़िक्स्ड तरह के अंदरूनी फ़ाइनल कॉज़ को मना करते हैं।

टैलोस. नैतिकता या किसी और चीज़ में कोई तय लक्ष्य नहीं होता. सोच के कोई तय नियम नहीं होते.

हम कैसे सोचते हैं, यह बदलती दुनिया में एडजस्टमेंट के लिए बस एक टूल है, और सोच के नियम ऐसे टूल के तौर पर सामने आए हैं जो उस एडजस्टमेंट में सफल साबित हुए हैं। तो, उनका कहना यह है कि फिलॉसफी प्योर थ्योरी नहीं है। यह प्रैक्टिकल कॉन्टेक्स्ट में पैदा होती है।

यह प्रैक्टिकल कॉन्टेक्स्ट में वापस आता है। ठोस अनुभव ही इसका पूरा मैट्रिक्स है, न कि सिर्फ़ थ्योरी के लिए थ्योरी। खैर, मुझे लगता है कि ये तीन कॉन्सेप्ट, अगर आप चाहें तो, ड्यूई की सोच का थ्योरेटिकल कोर कह सकते हैं।

मुझे सावधान रहना होगा कि मैं ड्यूई के साथ थ्योरेटिकल कैसे कहूँ, लेकिन उनकी सोच का थ्योरेटिकल कोर। यह वह बड़ी हाइपोथीसिस है जो एपिस्टेमोलॉजी, फिलॉसफी ऑफ माइंड, वगैरह, वगैरह के बारे में छोटी हाइपोथीसिस बनाती है , जिसके लिए उन्हें लगता है कि एक्सपेरिमेंटल कन्फर्मेशन है। एप्लीकेशन।

ठीक है. इन्हें देख लो. हम इसे जल्दी से कर सकते हैं.

मैंने पहले ही कहा कि वह एक्सपेरिमेंटल सोच की बात करते हैं, और मुझे दोबारा यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि क्यों। यह बस हर चीज़ पर साइंटिफिक मेथड का इस्तेमाल है। और इसलिए, वह एपिस्टेमोलॉजी को नेचुरलाइज़ करने की बात करते हैं।

असल में, आज तक, आपने नेचुरलाइज़्ड एपिस्टेमोलॉजी के बारे में किताबें और फिलॉसॉफिकल आर्टिकल पढ़े होंगे, और नेचुरलाइज़िंग एपिस्टेमोलॉजी का आइडिया असल में ड्यूई से शुरू होता है, आप देखिए। वह एक ऐसी एपिस्टेमोलॉजी चाहते हैं, जो यह बताए कि हमें कैसे जानना चाहिए, एक प्रिस्क्रिप्टिव एपिस्टेमोलॉजी के बजाय, वह एक ऐसी एपिस्टेमोलॉजी चाहते हैं जो, अगर आप चाहें तो, इंक्वायरी के नेचर को उसके नेचुरल एनवायरनमेंट में बताए, जो कि कंक्रीट एक्सपीरियंस की प्रैक्टिकल डिमांड है। नेचुरलाइज़्ड एपिस्टेमोलॉजी, जिसका मतलब है कि एपिस्टेमोलॉजी यह बताएगी कि इंक्वायरी नेचुरल सिलेक्शन की थ्योरी के अनुसार कैसे काम करती है।

तो, इवोल्यूशनरी चीज़ बताती है कि वह क्या कर रहा है। इसलिए, वह साइंटिफिक कॉन्सेप्ट्स के ऑपरेशनलिस्ट नज़रिए को बहुत साफ़ तौर पर अपनाता है। 1925 में, हार्वर्ड के फिजिसिस्ट पर्सी ब्रिजमैन ने 'द लॉजिक ऑफ फिजिक्स' नाम की एक किताब पब्लिश की, जिसमें उन्होंने ऑपरेशनलिस्ट नज़रिया डेवलप किया था, जिसके बारे में मुझे लगता है कि पहले भी दूसरों ने

इशारा किया था, लेकिन यह ब्रिजमैन ही थे जिन्होंने इसे सिस्टमैटिक तरीके से डेवलप किया, और डेवी ने इसे अपनाया।

तो, ऑपरेशनलिज़्म बस यह नज़रिया है कि साइंस में किसी थ्योरेटिकल कॉन्सेप्ट का मतलब इस बात से जुड़ा है कि जब आप कुछ ऑपरेशन करते हैं तो क्या अनुभव से देखा जा सकता है। यह एक ऑपरेशनल मतलब है, एक ऑपरेशनल डेफ़िनिशन है, एक ऑपरेशनल डेफ़िनिशन है। हाँ, हम हर समय इस बारे में बात करते हुए पाते हैं कि हमें चीज़ों को कैसे करना चाहिए, लोग थ्योरी, प्रपोज़ल, एजुकेशनल थ्योरी, करिकुलर आइडिया लेकर आते हैं, और सवाल यह है कि आप इसे ऑपरेशनलाइज़ कैसे करते हैं ? पॉलिटिकल पॉलिसी के साथ भी यही सच है।

ऑपरेशनलाइज़ करेंगे ? अब, आप देखिए, यहाँ प्रैगमैटिक थ्योरी ऑफ़ मीनिंग काम कर रही है, विलियम जेम्स, क्योंकि अगर आप जानना चाहते हैं कि किसी थ्योरेटिकल कॉन्सेप्ट का क्या मतलब है, तो आप पूछते हैं कि इसके प्रैक्टिकल नतीजे क्या हैं, जब आप इसे ऑपरेशनलाइज़ करते हैं तो क्या होता है ? तो, ऑपरेशनलिज़्म बस साइंस की फिलॉसफी में प्रैगमैटिक थ्योरी ऑफ़ मीनिंग का एक एप्लीकेशन है। मुझे जो उदाहरण पसंद है वह मिनरलॉजी से है, जहाँ मोहर का हार्डनेस स्केल, यानी मिनरल्स की हार्डनेस के बारे में बात करते हुए, हार्डनेस का कॉन्सेप्ट, मोहर का हार्डनेस स्केल आपको मिनरल्स की हार्डनेस के बारे में बताता है, कम से कम एक मिनरल की दूसरे मिनरल की तुलना में रिलेटिव हार्डनेस के बारे में। यह आपको बस इतना ही बताता है।

क्यों? क्योंकि मोहर के हार्डनेस स्केल का इस्तेमाल करने के उस ऑपरेशन में, आप दो मिनरल को एक दूसरे के खिलाफ रगड़ते हैं, और जो निशान छोड़ता है वह डेफिनिशन के हिसाब से उस निशान वाले मिनरल से ज़्यादा हार्ड होता है। तो, हार्डनेस क्या है? रिलेटिव स्क्रैचेबिलिटी । यह हार्डनेस की एक ऑपरेशनल डेफिनिशन है।

यह आपको यह नहीं बता रहा है कि हार्डनेस क्या करती है। नहीं, इसे वापस ले लो। यह आपको यह नहीं बता रहा है कि हार्डनेस क्या है।

कठोरता के सार के बारे में कुछ भी नहीं। यह इस बारे में है कि कठोरता क्या है जब आप कोई खास ऑपरेशन करते हैं, तो ऑपरेशनलिज़्म होता है । तो, ऑपरेशनलिज़्म साइंस की फिलॉसफी में है, और यह साफ़ तौर पर साइंस के इंस्ट्रूमेंटलिस्ट नज़रिए जैसा है।

इंस्ट्रूमेंटलिज़्म यह सोच है कि साइंस हमें असलियत के नेचर के बारे में नहीं बताता। यह बस हमें काम की जानकारी देता है जिसका इस्तेमाल हम आगे की जांच-पड़ताल या साइंस के एप्लीकेशन डेवलप करने के लिए कर सकते हैं। अब, आप साइंस मेजर से पूछें कि वे साइंस में क्यों जाते हैं, वे साइंटिफिक करियर क्यों बनाने जा रहे हैं।

आप पाएंगे कि उनमें से बहुत से लोग कहेंगे, ठीक है , क्योंकि मैं इससे क्या कर सकता हूं। आप देखिए, सिर्फ गुज़ारा करने के लिए नहीं, बल्कि मेडिसिन, इंजीनियरिंग, एनवायरनमेंटल काम, वगैरह करने के लिए। अप्लाइड साइंस।

अब, इंस्ट्रूमेंटलिज़्म कह रहा है कि असल में साइंस इसी बारे में है। आप देखिए, साइंटिफिक थ्योरीज़ को असलियत के नेचर के बारे में बताने के लिए नहीं लिया जाना चाहिए। साइंटिफिक थ्योरीज़ बस उन चीज़ों के लिए काम के इंस्ट्रूमेंट्स हैं जिन्हें हम एप्लाइड साइंसेज़ कहते हैं।

अब, आप इस सवाल पर आ रहे हैं कि थ्योरी और प्रैक्टिस के बीच क्या रिश्ता है। थ्योरी और प्रैक्टिस। जिस तरह से कुछ लोग लिबरल आर्ट्स एजुकेशन के बारे में बात करते हैं, आपको लगेगा कि एजुकेशन पूरी तरह से इंस्ट्रूमेंटल वैल्यू की है, इसका चीज़ों के असली सार से कोई लेना-देना नहीं है, इंसान होना क्या है, असलियत का नेचर क्या है।

तो, साइंस में इंस्ट्रूमेंटलिज़्म को एंटी-रियलिज़्म का एक वर्शन माना जाता है। आप देखिए, साइंटिफिक रियलिज़्म वह नज़रिया है जो साइंस हमें असलियत के बारे में बताता है। साइंटिफिक एंटी-रियलिज़्म वह नज़रिया है जो साइंस हमें असलियत के बारे में नहीं बताता।

और इस मायने में, ड्यूई साइंटिफिक एंटी-रियलिज़्म में मुख्य योगदान देने वालों में से एक हैं। लेकिन उनके कारणों पर ध्यान दें। ज्ञान एक बायोलॉजिकल जीव का अपने माहौल के साथ एडजस्ट करने का काम है।

ऐसे माहौल में एडजस्ट करने के लिए जिसमें दिक्कतें हों, आपको असलियत जानने की ज़रूरत नहीं है। आपको बहुत ज़्यादा थ्योरी की ज़रूरत नहीं है। आपको बस कुछ आइडिया चाहिए कि दिक्कत को कैसे हल किया जाए।

और इसलिए, ट्रेडिशनल फॉर्मल लॉजिक के बारे में बात करने के बजाय, वह एक्सपेरिमेंटल लॉजिक, एक्सपेरिमेंटल सोच के लॉजिक की बात करते हैं। उनकी एक किताब है जिसका नाम है लॉजिक, जिसमें कोई सिलोजिज्म नहीं है। लॉजिक एक्सपेरिमेंटल सोच के बारे में है, आप देखिए।

उनके पास एक छोटी सी किताब है, बहुत पॉट-लेवल, हाउ वी थिंक, जो असल में बताती है कि हम इस पॉट तरीके से, इस प्रॉब्लम-सॉल्विंग तरीके से कैसे सोचते हैं । ठीक है, आप हाईवे पर गाड़ी चला रहे हैं। प्रॉब्लम सिचुएशन।

आपके आगे एक साइड रोड से एक फार्म वैगन सड़क पर आ रही है। आप क्या करने वाले हैं? आपके दिमाग में आइडिया आ रहे हैं। ब्रेक, नंबर एक।

नंबर दो, सड़क से हट जाओ। नंबर तीन, सड़क से पूरी तरह हट जाओ। नंबर चार, हाथ ऊपर उठाओ और उम्मीद करो कि एयरबैग खुल जाए।

आपको पता है? अब, नॉर्मल बिहेवियर में, जैसे ही आपके दिमाग में ये आइडिया आते हैं, उनमें से कोई एक आपके मन में यह बात आ जाती है कि आपको क्या करना है। क्यों? आप फंडेड एक्सपीरियंस का इस्तेमाल करते हैं। हाँ, आपके पास कुछ समय तक गाड़ी चलाने का, आप देखिए, पिछले एपिसोड्स का, पूरा एक्सपीरियंस होता है।

आप इसे इस तरह से एक्सट्रपलेशन करते हैं। तो आप जो करते हैं वह है ब्रेक लगाना और गाड़ी घुमाना और एक ही बार में हाईवे से उतर जाना। अब, शायद कुछ ऐसी सिचुएशन हों जहाँ आपको सच में आइडिया के साथ एक्सपेरिमेंट करना पड़े ।

और वह एक ऐसे केस के बारे में बताता है जहाँ कोई जॉब इंटरव्यू के लिए जा रहा है। रास्ता एक जंगली इलाके से होकर, एक नाले के ऊपर बने पुल के पार, और वहाँ से शहर में जाता है। खैर, वह आदमी पुल पर पहुँचता है और पाता है कि वह टूटा हुआ है।

यह खत्म हो गया है। कोई पुल नहीं है। वह क्या करेगा? अगर वह सड़क से वापस घूमकर जाएगा, तो उसे जॉब इंटरव्यू के लिए देर हो जाएगी।

अगर वह दूसरा पुल ढूंढने की उम्मीद में ऊपर की तरफ़ बढ़ता है, तो यह एक पॉसिबिलिटी है। वह अपने दिमाग में इसके साथ एक्सपेरिमेंट करता है, मेंटल एक्सपेरिमेंट। चलो देखते हैं, वह दूसरा पुल वहाँ कितनी दूर है? मुझे वहाँ पहुँचने में कितना समय लगेगा, और फिर, जब मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा, तो वापस आऊँगा? ठीक है, मेंटल एक्सपेरिमेंट।

दूसरा ऑप्शन है नाले के पार लंबी छलांग लगाने की कोशिश करना। खैर, उसे पक्का नहीं पता कि यह काम करेगा या नहीं, इसलिए वह किनारे पर कुछ लंबी छलांगों की प्रैक्टिस करता है ताकि देख सके कि वह कितनी दूर जा सकता है। क्या आपको लगता है कि इससे काम बन जाएगा? खैर, चलो फिर भी कोशिश करते हैं।

और एक्सपेरिमेंटल कन्फर्मेशन। आइडिया क्या है? आप देखिए, आप एक आइडिया लेकर आते हैं। आइडिया क्या है? यह कोई रिप्रेजेंटेशन नहीं है, किसी प्राइमरी क्वालिटी वाली चीज़ की सेकेंडरी क्वालिटी में कोई कॉपी नहीं है।

नहीं। एक आइडिया एक हाइपोथीसिस है। यह एक्शन के लिए एक प्लान है, टेंटेटिव।

और आप अपने पिछले अनुभव से सीखते हैं, आप यह देखने के लिए एक्सपेरिमेंट करते हैं कि क्या इससे प्रॉब्लम सॉल्व होगी। और एक अच्छा आइडिया वह होता है जो काम करे। आप इसे कैसे काम में लाते हैं? इसे एक्शन में लाकर।

वेरिफ़ाई करना क्या है? वेरिफ़िकेशन का मतलब है इसे सच करना। आप इसे सच करते हैं। और यह तभी सच होता है जब आप अपने जॉब इंटरव्यू में समय पर पहुँचते हैं, बिना किसी गंदगी के।

तो, एक्सपेरिमेंटल सोच। वह एपिस्टेमोलॉजी के बारे में इसी तरह बात करते हैं। वह प्रैक्टिकल मकसद के लिए निश्चितता को नकारते हैं।

वह दर्शक के अनुभववाद को नकारते हैं। जॉन लॉक। टैबुला रासा।

बिना सोचे-समझे आइडिया लेना। बकवास। वह किसी भी सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट डुअलिज़्म को मना करते हैं, आप जानते हैं, जहाँ मन बाहर जो है उसका मेंटल रिप्रेजेंटेशन बना रहा है।

नहीं, वह इन सब बातों को नकारता है। क्योंकि ये सब सोच को काम से अलग करते हैं। थ्योरी को प्रैक्टिस से अलग करते हैं।

किसी विचार की उपयोगिता ही मायने रखती है। सत्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो हमेशा के लिए तय हो, देखने वाले से स्वतंत्र हो। सत्य बस किसी विचार की उपयोगिता, उसके काम करने की क्षमता है।

ठीक है, तो यह लॉजिक एपिस्टेमोलॉजी का एप्लीकेशन है। काफ़ी साफ़ है? देखा वह उस तरफ़ क्यों जा रहा है? मन की फिलॉसफी। खैर, फंक्शनलिस्ट साइकोलॉजी के बारे में नोट के बाद और कुछ कहने को नहीं है।

साफ़ है, वह मन या आत्मा की किसी भी सब्सटेंस थ्योरी को मना कर रहे हैं। अगर मन एक अलग चीज़ नहीं है, तो उन्हें कम से कम मन-शरीर की कोई समस्या नहीं दिखती। मन की फिलॉसफी के बारे में वह बस अलग-अलग चीज़ों के बारे में बात करने को तैयार हैं, जिन्हें हम मेंटल फंक्शन कहते हैं।

मेंटल एक एडजेक्टिव है। यानी, कुछ बायोलॉजिकल फंक्शन जिनमें चेतना शामिल होती है, वही मेंटल शब्द के लिए इस्तेमाल होते हैं। वैल्यू थ्योरी।

यहां, उनकी कई ज़रूरी रचनाएं हैं। उनकी एक काफी पुरानी किताब है जिसका नाम है 'द थ्योरी ऑफ़ वैल्यूएशन'। और फिर एक और किताब है जिसका नाम है 'ह्यूमन नेचर एंड कंडक्ट'।

और यहाँ वह वैल्यूज़ को सिर्फ़ आइडियाज़ मानते हैं। वैल्यूज़ आइडियाज़ हैं। किस मायने में? खैर, वैल्यूज़ आइडियल नतीजे हैं।

प्रॉब्लम वाली सिचुएशन में जो आइडियल नतीजे सामने आते हैं। कहने का मतलब है, जब तक सिचुएशन नहीं आती, तब तक आप उस फार्म वैगन से बचने को महत्व नहीं देते। तब आपको, बायोलॉजिकली, उससे बचने की ज़रूरत होती है।

और बायोलॉजिकल ज़रूरत से ही वैल्यूइंग होती है। ड्यूई को इस मायने में वैल्यू में कोई दिलचस्पी नहीं है कि क्या असल में और हमेशा के लिए कीमती है। उन्हें सिर्फ़ इस मायने में वैल्यू में दिलचस्पी है कि क्या एक्टिवली वैल्यूड है।

वैल्यूज़ वही होती हैं जिनकी वैल्यू होती है। और आप प्रॉब्लम सिचुएशन में उसी चीज़ को वैल्यू देते हैं जिसकी आप वैल्यू करते हैं। वरना आपको इसका एहसास नहीं होता।

दूसरे शब्दों में, वैल्यू ऐसे विचार हैं जो समस्या की स्थिति को हल करने के बारे में दूसरे विचारों को जन्म देते हैं। कोई भी अंदरूनी अच्छा अंत नहीं होता । कोई भी अंदरूनी अच्छा अंत नहीं होता ।

आपको याद होगा कि अरस्तू ने अच्छाई को अंदरूनी अच्छाई बताया था। सबसे बड़ी अच्छाई में बाकी सभी अच्छाइयां शामिल हैं। अंदरूनी अच्छाई, किसी और चीज़ के लिए अच्छा नहीं।

खैर, ड्यूई जिस बात पर ज़ोर देना चाहते हैं, वह है साधन-अंत का सिलसिला। यानी, अंत, आदर्श, अपने आप में अंत तक पहुँचने के साधन शामिल करता है। लेकिन जब वह अंत हासिल हो जाता है, तो याद रखें कि यह एक नए एंटीथीसिस के लिए थीसिस बन जाता है।

तो वह अंत अपने आप में आगे के लक्ष्यों तक पहुँचने का एक ज़रिया है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो सिर्फ़ एक अंत हो, एक अंदरूनी अंत हो, एक तय अंत हो। जब आप वहाँ पहुँच जाते हैं, तो आप वहाँ पहुँच जाते हैं, बस, बस।

यह कभी पीरियड नहीं होता। यह सब प्रोसेस है। इसलिए कोई नैतिक नियम नहीं हैं।

कोई सबसे बड़ी अच्छाई नहीं है। वैल्यूज़ तब पैदा होती हैं जब ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं। वैल्यूज़ ज़िंदा रहने का ज़रिया हैं।

वैल्यूज़, किसी अंदरूनी मतलब में, नैतिक चीज़ें नहीं हैं। वे गैर-नैतिक चीज़ें हैं। ज़िंदा रहना एक गैर-नैतिक चीज़ है।

कुछ नहीं। और फिर भी कुछ प्रॉब्लम वाली सिचुएशन में यह वैल्यू से भर जाता है। तो, एथिक्स का लेना-देना इस बात से है कि प्रॉब्लम को कैसे सॉल्व करें और जो हम चाहते हैं उसे कैसे हासिल करें।

समस्याओं को कैसे हल करें और जो हम चाहते हैं उसे कैसे पाएं। यह एक इंस्ट्रूमेंटलिस्ट एथिक है। वह इसे एथिक्स में इंस्ट्रूमेंटलिज़्म कहते हैं।

और ड्यूई का एथिक्स पर काम उन बड़े फैक्टर्स में से एक था जिसने दो या तीन दशक पहले सिचुएशन एथिक्स के डेवलपमेंट में मदद की। इसे इसी टाइटल की एक किताब से पॉपुलर किया गया, जिसे जोसेफ फ्लेचर ने लिखा था, जो यहां के एक और मशहूर फ्लेचर से जुड़ा नहीं था। हार्वर्ड में जोसेफ फ्लेचर।

सिचुएशन एथिक्स पर एक किताब। इसमें कहा गया है कि हाँ, हर नैतिक सिचुएशन को अलग-अलग तरीके से सुलझाना होगा । कोई आम नैतिक नियम नहीं हैं।

कोई तय गाइडलाइन नहीं। यूनिवर्सल नैतिक सिद्धांत। हर स्थिति को इस तरह से सुलझाना होगा जो इसमें शामिल लोगों को अच्छा लगे।

उन्होंने कुछ और चीज़ें जोड़ीं, लेकिन वही इसमें प्रैक्टिकल चीज़ है। और यह बहुत साफ़ है, ड्यूई की बात जिसमें कुछ एग्ज़िस्टेंशियल नोट्स शामिल हैं। तो, उस समय उनकी वैल्यू थ्योरी।

एजुकेशन? हाँ, एजुकेशन में, आप उनकी किताब, डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन, देखना चाहेंगे। डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन। वे एजुकेशन का काम जीना सीखना मानते हैं।

जीना सीखना। यानी, शिक्षा आपको प्रॉब्लम-सॉल्विंग के लिए ज़रूरी साधन देती है। प्रॉब्लम-सॉल्विंग के लिए।

सीखना इसलिए नहीं है कि आपके पास जीवन भर सोचने के लिए कुछ हो। प्लेटो और मेल्टन को पढ़ना।

जो भी हो। सीखना फिक्स्ड वैल्यूज़ डालने की कोशिश नहीं है। यह पुराने वैल्यूज़ की विरासत है।

नहीं, सीखने की यह वैल्यू नहीं है। यह तो क्लासिकल एजुकेशन है। एजुकेशन तो माहौल के साथ अच्छे से एडजस्ट होने की तैयारी है।

डिसिप्लिन-ओरिएंटेड होने के बजाय ।

या ऐतिहासिक रूप से उन्मुख। या सिर्फ़ बौद्धिक रूप से उन्मुख। ठीक है।

मुझे लगता है कि अमेरिकन एजुकेशन में, ड्यूई के समय से हमने क्लासिकल ट्रेडिशन और लाइफ स्किल्स देने वाली लर्निंग पर उनके ज़ोर का एक तरह का कॉम्बिनेशन डेवलप किया है। और मुझे लगता है कि इसकी वजह यह है कि चीज़ों को देखने का हमारा नज़रिया ड्यूई की कुछ चिंताओं को पूरी तरह से समझे बिना ही शामिल करने की ओर झुका है। हमारे पास अभी भी रेफरेंस के फिक्स्ड पॉइंट हैं।

धर्म पर लागू। और यहाँ, उनकी महत्वपूर्ण किताब का नाम है कॉमन फेस। कॉमन फेस।

अगर कोई तय सच या वैल्यू नहीं हैं, तो धर्म सिर्फ़ कुछ सच और वैल्यू को आगे बढ़ाने की कोशिश नहीं है। यह क्या है? यह एक जैसे आदर्शों के बारे में नहीं है। धर्म फिर से ज़िंदगी में बदलाव लाने का एक तरीका है।

एक ही बात हर जगह चलती है। उसे किसी धर्म या अलग-अलग धर्मों में उतनी दिलचस्पी नहीं है, जितनी धार्मिक शब्द में है, जिसका मतलब है एक क्वालिटी, ज़िंदगी के प्रति एक नज़रिया। धार्मिक नज़रिया समाज के आदर्शों के प्रति वफ़ादारी का होता है।

समुदाय के आदर्शों के प्रति वफ़ादारी। अब , ऐसा क्यों? इसके दो कारण हैं। एक है धर्म शब्द की उत्पत्ति, जिसका मतलब है फिर से बांधना।

या अगर आप चाहें, तो फिर से मिलाना। और इसलिए धर्म का काम है कि वह एक समुदाय के लोगों को पारंपरिक या पारंपरिक तरह के कुछ अमूर्त आदर्शों के प्रति वफ़ादारी के आधार पर फिर से मिलाता है। कोई दो तय नहीं हैं।

दूसरे शब्दों में, धर्म अपने साधन की वजह से ज़रूरी है। इसलिए नहीं कि यह सच है। बल्कि इसलिए कि यह साधन है।

और इस संदर्भ में, भगवान शब्द किसी जीव का नाम नहीं है, बल्कि उन आदर्शों का प्रतीक है जिन्हें समुदाय मानता है। भगवान की खोज। समुदाय के आदर्शों की खोज।

और वह तर्क देंगे कि यह सभी ऐतिहासिक धर्मों में सबसे कम कॉमन डिनॉमिनेटर है। सभी ऐतिहासिक धर्मों में सबसे कम कॉमन डिनॉमिनेटर। वह किसी विश्वास को नहीं, बल्कि एक नज़रिए को अलग कर रहे हैं ।

और आखिरकार, धर्मों को एक कम्युनिटी के तौर पर माना जाता है। उस विश्वास की चिंताओं के इर्द-गिर्द एकजुट होकर। तो, ड्यूई धर्म के बारे में जो कह रहे हैं, वह असल में धार्मिक मानवतावाद का सार है।

और ड्यूई ह्यूमनिस्ट मैनिफेस्टो के ओरिजिनल साइन करने वालों में से एक थे, जिसने 1930 के दशक में घोषणा की थी कि यूनिवर्स अपने आप मौजूद है, इंसान प्रकृति का हिस्सा है, और एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया के नतीजे के तौर पर उभरा है । इंसानों की धार्मिक संस्कृति प्राकृतिक माहौल के साथ इंटरेक्शन की वजह से धीरे-धीरे हुए विकास का नतीजा है । साइंस इंसानी मूल्यों की किसी भी सुपरनैचुरल या कॉस्मिक गारंटी को नामंज़ूर बनाता है।

धार्मिक मानवतावाद इंसानी पर्सनैलिटी की पूरी समझ, संतुष्टि, वगैरह को ही ज़िंदगी का अंत मानता है। वगैरह। और मेरे पास उस ह्यूमनिस्ट मैनिफेस्टो की कॉपी हैं, जिसे आप जाते समय उठा सकते हैं, जिसे आप अपनी मर्ज़ी से पढ़ सकते हैं।

बहुत दिलचस्प डॉक्यूमेंट है। 70 और 80 के दशक का सेक्युलर ह्यूमनिज़्म बस इसी का बाद का वंशज है। रिलीजियस ह्यूमनिज़्म एक नेचुरलिस्टिक धर्म है।

समझे? नेचुरलिस्टिक धर्म। जहाँ भगवान का मतलब वही है जो ड्यूई कहते हैं। यानी, यह आदर्शों का प्रतीक है।

और नहीं। और अक्सर यह एक नेचुरलिस्टिक ह्यूमनिज़्म है जो आजकल आपको यूनिटेरियन सर्कल में मिलता है। ऐतिहासिक रूप से यूनिटेरियनिज़्म एक तरह का ईश्वरवाद था।

आप देखिए, ट्रिनिटेरियनिज़्म के खिलाफ़। लेकिन तेज़ी से यूनिटेरियनिज़्म और यूनिटी मूवमेंट बस नेचुरलिस्टिक ह्यूमनिज़्म बन रहे हैं। कुछ खास वैल्यूज़ को अपनाने के साथ।

असल में, नैतिक और सामाजिक मूल्यों को अक्सर बहुत अच्छा माना जाता है। इसलिए यह धार्मिक पहलू है जो प्राकृतिक तत्व है। खैर, ठीक है, हम अगली बार इस पर बात करेंगे।

जॉन डेवी पर कुछ कमेंट्री।